पुस्तक समीक्षा

भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा
7(1) 201–202, 2020
© 2020 Indian Sociological Society
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2349139620921997
http://bss.sagepub.in

संजय पालिश्कर और सतीश देशपांडे (संपादित), *सेक्टेरियन वॉयलेंस इन इंडिया: हिंदू-मुस्लिम कॉनफ्लिक्ट, 1966–2015*, हैदराबाद: ओरियंट ब्लैकस्वान, पृष्ठ XXV + 457, ₹795 आई.एस.बी.एन. 978-5287-585-6.

आजादी के बाद से ही भारत हिंदू एवं मुस्लिम समूहों के मध्य होने वाले सांप्रदायिक दंगों का साक्षी रहा है। भारत में समालोचकों एवं समाज वैज्ञानिकों द्वारा इन सांप्रदायिक दंगों के साथ ही साथ देश में इस तरह की हिंसा की विशिष्ट प्रकृति के प्रति चिंताएँ व्यक्त की गई हैं। लगातार होने वाली इस प्रकार की हिंसा की घटनाएँ देश को विचलित कर देती हैं जिससे यह अध्ययन का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बन जाता है। प्रस्तुत खंड *सेक्टेरियन वॉयलेंस इन इंडिया: हिंदू-मुस्लिम कॉनफ्लिक्ट* में भारत में चल रहे सांप्रदायिक संघर्ष की एक साक्षी की तरह समीक्षा की गई है। यह सन् 1960 के अंत से सन् 2015 तक की सांप्रदायिक हिंसा के संदर्भ में एक संचयी योगदान है।

इस विषय को समझने के लिए भारत में आजादी के बाद सांप्रदायिक हिंसा पर समालोचकों द्वारा लिखे गये लेख जो कि पूर्व में 'इकॉनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली' में प्रकाशित हो चुके हैं, उनका इस पुस्तक में समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया है।

'इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली' के सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं की विस्तृत जानकारी के साथ ही विशिष्ट रूप से असगर अली इंजीनियर द्वारा लगभग 25 वर्षों की अवधि में किये गए योगदानों का इसमें उल्लेख है। उन्होनें भारत में हिंदू और मुस्लिम समुदायों के मध्य सांप्रदायिक संघर्षों, उनके संबंधों का इतिहास, असामंजस्यता के अंतर्निहित कारण और शत्रुता एवं हिंसा को बढ़ाने वाली तथा सामंजस्यता को बिगाड़ने वाली मुख्य परिस्थितियों पर विविध रूप से लिखा है। अतः यह पुस्तक असगर अली इंजीनियर (1939–2013) को एक श्रद्धांजलि है।

प्रस्तुत पुस्तक में 38 लेखों को समीक्षात्मक आधार पर सम्मिलित किया गया है जिन्हें चार खंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम खंड 'सामान्य सर्वेक्षण 'से संबंधित है जो दंगों को एक लंबी अवधि या पुनरावृत्तिक प्रघटना के रूप में देखता है। इस खंड में एक ओर हिंदू-मुस्लिम संबंधों के ऐतिहासिक सर्वेक्षण सम्मिलित हैं जिसमें मुस्लिम समुदाय के परिवर्तित दृष्टिकोण पर बल दिया गया है। दूसरी ओर सांप्रदायिकता पर साहित्य के सर्वेक्षण को भी सम्मिलित किया गया है। असगर अली इंजीनियर के लेख प्रथम प्रकार के हैं और इसी खंड में इम्तियाज़ अहमद का लेख सांप्रदायिकता को एक बेहतर ढंग से समझने के लिए ऐतिहासिक विकास के महत्त्व की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। सूर्यप्रकाश उपाध्याय और रोवेना रॉबिनसन के लेख सांप्रदायिक साहित्य पर एक सर्वेक्षण है।

आधुनिक भारत में सांप्रदायिक विवादों एवं स्थितियों की विभिन्न सिद्धांतों द्वारा चर्चा की गई है और विभिन्न तरीकों से उनका वर्णन किया गया है। द्वितीय खंड में 'अवधारणात्मक मुद्दों' को संप्रदायी हिंसा के विषय में उठाया गया है। इस खंड के लेख 'सांप्रदायिकता के विभिन्न स्तरों', आंकड़ों की उपयुक्तता और विश्वसनीयता, प्रतिद्वंदी, सैद्धांतिक स्पष्टीकरण, पद्धति संबंधी मुद्दे और जाँच में आने वाली आपत्तियों एवं कठिनाइयों की पहचान करने से संबंधित है। सांप्रदायिक हिंसा की चर्चा एवं उससे संबंधित आँकड़ों एवं सिद्धांतों की इसलिए भी जरूरी है कि आकस्मिक और बिना किसी स्पष्टीकरण के होने वाली यह घटनाएँ अमानवीय प्रतीत होती है।

तृतीय खंड 'सांप्रदायिक राजनीति' के व्यापक क्षेत्र से संबंधित है जो अनौपचारिक रूप से सांप्रदायिक हिंसा से संदर्भित है। इस खंड में 15 लेख सामान्य क्षेत्रीय सांप्रदायिक राजनीति को समाविष्ट करते हैं। इस खंड में 4 लेख विशिष्ट रूप से भारत में मुस्लिम समुदाय, जिनमें सांप्रदायिक राजनीति के अपने भेद भी सम्मिलित हैं, पर आधारित हैं। ए. आर. देसाई भारत के मार्क्सवादी दलों की सांप्रदायिकता से निपटने के लिए मौन स्वीकृति की आलोचना करते हैं जबकि इसी खंड के कई लेखों में कांग्रेस पार्टी की आलोचना भी की गई है।

अंत में चतुर्थ खंड में विशिष्ट दंगों से संबंधित लेखों का स्वबोधात्मक और हिंसा का उद्भेदन सम्मिलित है। इस खंड के लेख सांप्रदायिक हिंसा के वैयक्तिक मामलों को सम्मिलित करते हैं जो लगभग 1960 के अंत से 1980 तक के दो दशकों को समाविष्ट करते हैं। इस खंड में सम्मिलित कुछ लेखों में दंगों के परीक्षण, कार्य एवं परिस्थितियों की जटिल स्थिति में उनके उद्भव की पहचान की कोशिश की गई है। इस प्रकार का विश्लेषण ज्ञानवर्धक हो सकता है लेकिन भविष्य में दंगों की आशंका को रोकने में इसकी उपयोगिता सीमित है।

संख्याओं के संदर्भ में प्रथम खंड चार प्रविष्टियों के साथ सबसे छोटा खंड है, जबकि द्वितीय और चतुर्थ खंडों में प्रत्येक में 10 लेख हैं और तृतीय खंड में 15 लेख हैं। प्रत्येक खंड में लेखों के विशिष्ट समूहों को प्रस्तुत करने के लिए चार खंडों में संक्षिप्त प्रारंभिक लेख रखे गए हैं।

पुस्तक के चौथे खंड में सैद्धांतिक और अवधारणात्मक अवलोकन किया गया है। सांप्रदायिक हिंसा में राजनीति की जटिल एवं सामान्य भूमिका की जाँच की गई हैऔर स्वतंत्र भारत में हुए कुछ दंगों का स्पष्टीकरण दिया गया है। चतुर्थ खंड में सांप्रदायिक हिंसा को राजनीति के विभिन्न कारकों जैसे धर्म, वोट बैंक आदि की राजनीति के साथ ही इस मुद्दे पर आधारित है कि इस प्रकार की हिंसा जैसे जाति एवं लैंगिक व्यवस्था को किस प्रकार से प्रभावित करती है।

इस पुस्तक को एक संदर्भ के रूप में देखा जा सकता है कि इसमें सांप्रदायिकता पर भारत के जाने-माने विद्वानों के लेख हैं। यह पुस्तक समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी होगी।

सुमित्रा शर्मा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
ई-मेल: sumitrasharma1974@gmail.com